प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

आचार्य महाप्रज्ञ की मासिक पुण्य तिथि का आयोजन

'आचार्य महाप्रज्ञ में था प्राणीमात्र के प्रति दया का भाव'

– आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 8 जून, 2010

स्थानीय किशनलाल नाहटा के निवास के परिपार्श्व में स्थित चौरड़िया प्रशाल में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने अपने प्रवचन में कहा कि व्यक्ति पाप कर लेता है किंतु जो वर्तमान को ही सबकुछ मान लेता है और आगे की प्रवाह नहीं करता हे वह पापकारी प्रवृत्ति में लगा रहता है। जो आदमी पाप से नहीं डरता है वह गलत काम करता है। जो आदमी गलत काम करता है उसे पछताना भी पड़ता है। मनुष्य जीवन के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने जीवन में भलाई और सच्चाई का कार्य करे, जिससे उसका वर्तमान जीवन और आगे की गति भी अच्छी हो सकती है।

आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य मे आचार्यश्री महाप्रज्ञ की मासिक पुण्य तिथि का आयोजन हुआ, इस आयोजन में आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित गीत 'ऊँ महाप्रज्ञ गुरुदेव' गीत का सस्वर संगान हुआ तथा अनेक साधु-साध्वियों ने गीत एवं विचारों के द्वारा अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि वैशाख कृष्णा एकादशी को आचार्य महाप्रज्ञ का देवलोक हुआ और आज ज्येष्ठ कृष्णा एकादशी है, एक महीना हो गया। उन्होंने हर महीने की एकादशी को एक वर्ष तक पुण्य तिथि मनाने की चर्चा करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ क विचारों को आत्मसात करना चाहिए। उन्होंने कहा आचार्य महाप्रज्ञ में प्राणीमात्र के प्रति दया और करुणा का भाव था।

इस अवसर पर मुनि सुखलाल, मुनि किशनलाल, मुनि मोहजीतकुमार, साध्वी संगीतप्रभा आदि ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम के पश्चात जयपुर से समागत ओमप्रकाश जैन, पन्नालाल पुगलिया ने आचार्यश्री महाश्रमण से जयपुर पधारने की अर्ज प्रस्तुत की।

शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)